स्यामा स्याम जोड, करतां कलोल।
रमे रंग रोल, थाय झकझोल, बंने एक मतसूं।।५ ।।

श्यामा-श्यामजी की जोड़ी किलोल कर रही है और आनन्द में मस्त है। दोनों एक ही विचार से आपस में लिपटे हैं। (लिपटे पड़े हैं)

बेहू सरखा सरूप, मेली मुख कूप।
पिए रस घूंट, अमृतनी लूट, लिए रे अनितसूं।।६ ।।

रस के दोनों स्वरूप एक से हैं। मुख को मुख से जोड़कर रस के घूंट पीकर अमृत जैसा आनन्द लूट रहे हैं जो निश्चित है।

आलिंघण लिए, रंग रस पिए।
बंने सुख लिए, लथबथ थिए, आ भीनी स्यामा पतसूं।।७ ।।

श्यामाजी और श्याम आपस में चिपक गए हैं। आनन्द का रस-पान कर रहे हैं। दोनों आलिंगन कर सुख ले रहे हैं। ऐसी अलमस्त श्यामाजी पति के साथ मस्त हैं।

इंद्रावती वात, सुणो तमे साथ।
जुओ अख्यात, बंने रलियात, रमतां इजतसूं।।८ ।।

हे मेरे साथजी! तुम श्री इन्द्रावतीजी की बात सुनो और देखो। वह कहती हैं कि यह दोनों विचित्र लीला में मग्न हैं और मर्यादा के अन्दर खेल रहे हैं।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ५६६ ।।

राग सामेरी

रामत आंबानी कीजे मारा वालैया, आवी ऊभा रहो लगतां रे।
सखियो ज्यारे बल करे, त्यारे रखे कांई तमे डगतां रे।।१ ।।

हे वालाजी! आओ, खड़े रहो। हम आम की रामत खेलें। हे वालाजी! जो सखियां आपके चरण पकड़ कर लेटी हैं, उनको जब दूसरी सखियां खीचेंगी तो आप हिलना नहीं।

तमे आंबला ना थड थाओ, अमे चरण झालीने बेसूं।
मारो आंबो दहिए दूधे सीचूं, एम केहेसूं प्रदखिणा देसूं।।२ ।।

हे वालाजी! आप आम का तना बन जाओ। हम आपके चरण पकड़ कर बैठेंगे और 'अपने आम को दूध दही से सींच रही हूं' ऐसा कहकर परिक्रमा देंगे।

केटलीक सखियो आंबलो सींचे, अमे चरण तमारे वलगां।
द्रढ करीने अमे चरण ग्रह्या, जोइए कोण करे अमने अलगां।।३ ।।

कुछ सखियां आम को सींच रही हैं और हम तुम्हारे चरण में लिपटी हैं। हमने इतनी मजबूती के साथ चरणों को पकड़ा है। अब देखते हैं कौन अलग करता है?

बल करीने तमे ऊभा रेहेजो, खससो तो हंससे तम पर।
जो अमे चरण ग्रही नव सकूं, तो सहु कोई हंससे अम पर।।४ ।।

वालाजी! आप स्थिर होकर खड़े रहना। हटोगे तो हंसी आपकी होगी। यदि चरण हमसे छूट गए तो हंसी हमारी होगी।

Nijanand App

ते माटे रखे चरण चाचरो, थिर थई ऊभा रेहेजो।
जो जोर घणुं आवे तमने, त्यारे तमे अमने केहेजो।। ५ ।।

इसलिए आप अपने चरणों को हिलने नहीं देना और स्थिरता से खड़े रहना। यदि आपको चरण खींचने से कष्ट मालूम हो तो हमें कहना।

अनेक सखियो चरणे वलगी, खसवा नहीं दीजे रे।
वालो सखियो सहुथाजो सावचेत, ओलियो ऊपर सामी हांसी कीजे।। ६ ।।

बहुत-सी सखियां चरणों से लिपट गईं और हिलने नहीं देतीं। हे वालाजी और हे सखियो! सावधान हो जाओ। हारने वाले की हंसी होगी।

जे सखी सांची थई ने वलगी, ते ता वछोडतां नव छूटे रे।
ओलियो सखियो बल करी करी थाकी, ते ता उठाडता नव उठे रे।। ७ ।।

जो सखी सच्चे दिल से चरणों से लिपटी है, वह छुड़ाने पर भी नहीं छूटती है। दूसरी खींचने वाली सखियां ताकत लगा-लगाकर थक गईं, फिर भी उठाने पर नहीं उठतीं।

जे सखी चरणे रही नव सकी, ते पर हांसी थई अति जोर।
इंद्रावती वालो ने सखियो, दिए ताली हांसी करे सोर रे।। ८ ।।

जो सखी चरण पकड़कर नहीं रह सकी। उसकी बड़ी जोरदार हंसी हुई। श्री इन्द्रावतीजी, वालाजी और सखियां ताली बजा-बजाकर हंस-हंसकर शोर मचाते हैं।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

राग आसावरी

रामत उडन खाटलीनी, मारा वालाजी आपण कीजे रे।
रेत रूडी छे आणी भोमे, ठेक मृग जेम दीजे रे।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, हम उडन खाटली (हिरन के समान लम्बी छलांग) की रामत खेलें। इस भूमि की रेत बड़ी अच्छी है, हम मृग की तरह छलांग लगाएं।

सखियो मनमां आनंदियो, ए रामतमां अति सुख रे।
साथ सहु रब्दीने रमसुं, मारा वालाजी सनमुख रे।। २ ।।

सखियों को मन में बड़ा आनन्द हुआ कि यह रामत अति सुखदाई है। मेरे वालाजी के सामने सब प्रतियोगिता से कूदेंगे।

पेहेलो ठेक दीधो मारे वाले, पछे जो जो ठेक अमारो रे।
तो मारा वचन मानजो सखियो, जो दऊं ठेक वालाजीथी सारो रे।। ३ ।।

सबसे पहले वालाजी ने छलांग मारी। उनके पीछे मेरी छलांग देखो। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरी बात मानना। मैं वालाजी से अच्छी छलांग लगाऊंगी।

जुओ रे सखियो तमे वालोजी ठेकतां, दीधी फाल अति सारी रे।
निसंक अंग संकोडीने ठेक्या, जांऊं ते हूं वलिहारी रे।। ४ ।।

हे सखियो! देखो वालाजी छलांग लगा रहे हैं। उन्होंने अच्छी छलांग लगाई। वह अंग को सिकोड़ कर कूदे। मैं उन पर बलिहारी होती हूं।

Nijanand App